Prof. Dr. V. B. Chandekar

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII Issue - I January - March - 2019

English Part - II / Hindi

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.) M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	रामदरश मिश्र के उपन्यासों में नारी समस्याएँ **विरादार राजकुमार अर्जुनराव**	१-३
२	धूमिल की कविताओं में जनतांत्रिक चूनौतियाँ **प्रा. डॉ. पी. एम. भुमरे**	४-६
३	संजीव के उपन्यासों में आदिवासी जन-जीवन की समस्याओं का चित्रण **डॉ. लक्ष्मण तुळशीराम काळे**	७-९
४	समस्याओं के घेरे में भारतीय स्त्री **प्रा. डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड**	१०-१४
५	भारत वर्ष में अल्पसंख्यकों की समस्याएँ **डॉ. मौलाना महेताब सय्यद**	१५-१८
६	लोकतंत्र के सम्मुख समस्याएं **सहा. प्रा. व्ही. बी. चांदजकर**	१९-२१
७	भारतीय समाज में स्थित स्त्री, दलित, आदिवासी एवं अल्पसंख्यांको की समस्याएँ **डॉ. पवार विक्रमसिंह विजयसिंह**	२२-२५
८	विश्वीकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव **प्रा. डॉ. अशोक पुरभाजी टिपरसे**	२६-३०

432

VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

६. लोकतंत्र के सम्मुख समस्याएं

सहा. प्रा. व्ही. बी. चांदजकर
मातोश्री शांताबाई गोटे महाविद्यालय, वाशिम.

जनता के व्दारा जनता के हित के लिए जनतप पर किए शासन को लोकतंत्र कहॉ जाता है. दुसरे शब्दो में कहा जा सक ता है कि लोकतंत्र जनता को इच्छा और कल्याण का प्रतीकहै. जब कभी जनता की इच्छा केंद्रीय या प्रांतिए शासन को पसंद नही करतीतो उसे दुसरीसरकार से बदल देतीहै. जबकि तानाशाही में एकही शासकहोताहै और उसे कभी भी बदला नही जा सकता.

भारत में लोकतंत्रस्थापीतहै. भारत का चाहे कोई भी प्रधानमंत्री रहाहो सभी ने अपने दृष्टिकोन और समझ के अनुसार देश के विकास के लिए कार्य कियाहै और यह कार्य कई मायनो मेसफल रहाहै. जीसके कारण आज हम आर्थिक दृष्टीसे , वैज्ञानिक दृष्टीसे , औद्योगिक दृष्टीसे एंव सामाजिक दृष्टीसे पहेली की अपेक्षा काफी प्रगतीशीलहो गए है.

लोकतंत्र केतीन भाग होतेहै. न्यायपालिका, कार्यपालिका एंव विद्यायिकाइन्ही के व्दारा लोकतंत्र का पूरा संचालन होताहै. भारतीय लोकतंत्र में वैसे ही बहुतसारी उपलब्धीया है. लेकिन कुछ समस्याए भी है. यहांपर कईसारी राजनीतिक दलहै. जो सत्ता मोह और स्वार्थ के व्दारा उपजेहुए है. उन सभी की प्राथमिकी सत्ता का भोग करनाहै. इसी कारण लाकेतंत्र की भावना का जमकर दूरपयोगहो रहाहै.

हमारे लोकतंत्र की सबसे बडी समस्या है कीहम सभी आपस में भेद भाव रखतेहै. यहांपर अल्पसंख्यांक ,बहुसंख्यांक, जातिवाद आदि भेदभाव के कारणहै. इन सभी भेद भाव के कारण स्वस्थ लोकतंत्र का निर्माण नही पाता है. लोग विकास की ओर ना देखकर अपनी जाति एंव धर्म से संबंधित प्रत्याशी को वोट करतेहै और उन्हे जीतातेहै. ऐसाही भेद भाव आजकल नौकरियों में भी दिख रहाहै.

लोकतंत्र की एक और समस्या यहहै की, यहांपर कोई भी व्यक्ति अपनी जिम्मेदारीसे बचता हुवा दिखताहै. मंत्री, उपमंत्री को जिम्मेदार मानता है. उपमंत्री सचिव को जिम्मेदार मानता है. सचिव उपसचिव को जिम्मेदार मानतेहै. इसं तरहसे अधिकारी भी अपने निचे कार्य कर रहे अधिकारीयों को संबंधित कार्य के प्रति जिम्मेदार मानतेहै. जिस कारण से कोई भी कार्य जिम्मेदारी पूर्वक सफल नहीहो पाता हे.

लोकतंत्र शासन की ओर एक समस्या अधिनायकवादी प्रवृत्ती है. भारत काप्रधानमंत्री लोकतांत्रिक पध्दतीसे प्रधानमंत्री के पद को प्राप्त कराहै . परंतु प्रधानमंत्री बनने के बाद प्राय देखा जाता हे की उसमेतानाशाह की भावना जाग्त हो जातीहै . इंदिरा गांधी , राजीव गांधी आदि में यह पवृत्ती रही. जनताव्दारा निर्वाचित प्रदेशसरकार को बदलने के लिए राष्ट्रपती शासन लगाना, राज्य सरकार के कार्य मेंहस्तक्षेप करना लोकतंत्र की आड में जनतंत्र कीहत्या करनेवाले तथ्य हे.

भारत में लोकतंत्र की यह एक समस्या है [illegible] और [illegible] और [illegible]

भारत [illegible] है [illegible] देश के [illegible]

लोकतंत्र में [illegible]

भारत की [illegible] और [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] भारत के [illegible]

लेकिन भारत में जाति के आधारो पर इन्सान इन्सान काही शोषण करताहै. जाति व्यवस्था भारत के लोकतंत्र केसामनेबड़ी समस्या बन गई है.

इस प्रकार हम कहसकतेहै की लोकतंत्र की व्यवस्था भारत मेंहोकर भी जीवित नहीहै. लोकतंत्र के चारो स्तंभो को इतना कमजोर कर दियाहै की भारत में वास्तविक लोकतांत्रिक शासन होना अब असंभव लगता है. भारत में लोकतंत्र की कमजोरी का कारण है की चारोतरफ भ्रष्टाचार , घुसखोरी, अराजकता और आतंकवाद फैला हुवा है. आतंकवाद वर्तमान समय में भयंकर विश्ववव्यापी समस्या बन गई है. आतंकवाद भारत की प्रमुख सबसे बड़ी समस्या है. जिसने भारतीय लोकशाही को जर्जर बना दियाहै. आतंकवादने भारत को आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितीयों को प्रभावित कियाहै. भारतीय लोकशाही को कमजोर आतंकवाद बना राहाहै. लंबे समय तक आतंकवाद जारी रहने का गंभीर परिणाम यहहोताहै की जनता का विश्वास सरकार से उठ जाता है और राजनितीक अस्थिरताकाभय निरंतर बना रहाहोताहै.

संदर्भ

1. Ghuha Ram Chandra INDIA AFTER GANDHI, Preview, 2017
2. Rajni Kothari Rajni, RETHING DEMOCRACY, Orient LangmanPvt Ltd, New Delhi, 2005
3. Sharma L.K. OPEN INDIA ELECTIONS DIMINISH DEMOCRACAY IN INDIA. Date-5.12.2018
4. WHAT DEMOCRACSY LOOK LIKE, Letter Viewbooks, Date-15.02.2019
5. GodboleMadhav, INDIAN PARLIMENTRY DEMOCRACY TRIAL, September-2015